10

अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पुरंदर दास के पद

अन्नमाचार्य और पुरंदर दास समकालीन माने जाते हैं और वे दोनों तीर्थ यात्रा के समय मिले एवं उन्होंने आपस में संगीत के अनुभवों का आदान -प्रदान किया। तथापि, इन दोनों प्रसिद्ध वाग्गेयकारों की रचनाओं को समान आदर के साथ रखते हैं। पूर्ववर्ती की रचनायें प्रचार में संकीर्तन कहलाती हैं जो तेलुगु भाषा में रचित हैं य जबकी पश्चातवर्ती की रचनायें प्रचार में पदगलु कहलाती हैं जो कन्नड़ भाषा में रचित हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी:

- रचयिताओं का संगीत के प्रति दृष्टिकोण पहचान पायेगा
- रागों और तालों के प्रयोग का वर्णन कर पायेगा
- रागं लक्षणं पहचान पायेगा
- रागं तिलंग की स्वर लिपि लिख पायेगा

राग लक्षणं

मुखारी 22वें मेल खरहरप्रिय की जन्य राग है।

आरोहनं- स $रि_2$ $म_1$ प $नि_1$ $ध_2$ सं

अवरोहनं- सं $नि_1$ $ध_1$ प $म_1$ $ग_1$ $रि_2$ स

टिप्पणी

भाषांग राग तथा अन्य स्वर शुद्ध धैवत

वादी स्वर – ऋषभ

संवादी स्वर – धैवत

संचारं

रि म प – म ध प म ग रि – प म ग रि स – नि ध प ध स रि म –
म ग रि म प नि ध प – नि ध स, – स रि प म ग रि स , –
नि ध प – रि म प, – म ध प म ग रि – प म ग रि स , – नि ध स –

रागं : मुखारी **तालः आदि**
(सप्तगिरि कीर्तन) **रचयिता: अन्नमाचार्य**

पल्लवी

ब्रह्म	कदिगिन	पादमु	
ब्रह्ममु	तनेनी	पादमु	

चरणं-I

चेलगी	वसुधा	गोलिचीना	नी	पादमु
बालि	ताल	मोपिना		पादमु
तालगक	गगनमु	तन्निना		पादमु
बलरिपु	गाचिन	पादमु		

चरणं-II

कामिनि	पापमु	कदिगिन	पादमु	
पामु	तलनिदिन	पादमु		
प्रेमपु	श्रीसति	पिसिकेदि	पादमु	
पमिदि	तुरगपु	पादमु		

चरणं-III

परमु	योगुलकु	परिपरि	विधमुल	
परमो	सगेदि	नी	पादमु	
तिरु	व्यंकट	गिरि	तिरमनि	चूपिन
परम	पादमु	नी	पादमु	

टिप्पणी

रागं : मुखारी

तालं : आदि

रचयिता: अन्नमाचार्य

पल्लवी

(1) ॥ ;नि,,ध ससस रिरि ।, रिगरि ।स,,, ॥
ब्रह्म कदिगिन पा-द मु

(2) ॥ ,सरि नि,, ध स,रिस रिमपनि ।धप पम गरि ।स,,, ॥
ब्रह्म क दि गि न - पा दमु

। ; य,रि,म म,प,, ध प मपधप मपधप पमगरि
ब्रह्म मु त ने नी पा - - द मु - - - -

(3) ॥ स , , रि नि , ध स, रि स रि म प नि ध प प म ग रि रि रि ग रि स ,
ब्रह्म कदि गि-न - - पा - द मु - -

, , , रि , म म , प , , नि नि ध ध, स, सनिधप मप ध प प म ग रि
ब्रह्ममु त - ने नी पा - द मु - - - -

(4) ॥ स , , रि नि , ध --वही-- --वही--
ब्रह्म

॥ , --वही-- स रि प म ग रि स रि स नि ध प प म ग रि
पा - - - - - द मु - - - - -

स , ,

चरणं-I

; म म , म म म म , ग रि , ग ग म, प , ध प
चेलगी वसुधा गोलि चीना नी पादमु

; रि म , प ध , नि , नि नि प ध रि स नि ध ध प , ,
बालि ता ल मोपिना पा द मु

ध प --वही-- --वही--

, रि म , प ध , नि नि नि नि स ध रि स ग रि स नि ध प नि
बालिताल मो - पिना पा - - - - द मु

टिप्पणी

(1) , , नि ध , स स , रि रि ग रि रि रि ग रि स , , ग रि नि ध
तालगक गगनमु तन्निना पा - - दमु

, नि ग रि स नि ध ध प म प ध प म प ध प प म ग रि
बलरिपु गाचिन पा - द मु, , , - - - -

(2) स , नि ध , स रि स रि रि , प म ग रि --वही--
ताल ,गक गग नमु
--वही-- --वही--

रागं तिलंग

आरोहनं- स $ग_2$ $म_1$ प $नि_2$ सं

अवरोहनं- सं $नि_2$ प $म_1$ $ग_2$ स

औडव- औडव राग

वादी: गंधार

संवादी: निषाद

संचारं ग म प नि सं प- म ग- स ग म ग स
नि स ग म प म ग म प नि सं प - म प नि सं- नि स ग म ग
स ग म ग स , - सं नि प म ग - ग प म ग स- स नि प नि स

रागं तिलंग **तालं: आदि (तिस्रगति)**

रचयिता: पुरंदर दास

पल्लवी

तारक बिंदिगे ना नीरिगे नोगुवे
तारे बिंदिगेया
बिंदिगे ओदे दारे ओंदे कसु तारे बिंदिगेया

चरणं-I

राम नाम वेंबो रसवुल्ला नीरिगे
तारे बिंदिगेया
कामिनियारा कूडे एकंत वदेनु
तारे बिंदिगेया

चरणं-II

गोविंद एंबो गुनवुल्ला नीरिगे
तारे बिंदिगेया
आवव परियाली अम्रितद पनके
तारे बिंदिगेया

चरणं-III

बिंदु माधवन घत्तके होगुवे
तारे बिंदिगेया
पुरंदर विट्ठलगे अभिषेक मादुवे
तारे बिंदिगेया

10.2 रागः तिलंग

तालः आदि (तिस्रगति)

आरोहनं- स ग म प नि सं **रचयिताः पुरंदर दास**

अवरोहनं- सं नि प म ग स

पल्लवी

(1) ॥ सगम पपप निपनिपपम मप,निप मग
तारक बिंदिगे ना नीरिगे नो गु-वे-
। गमपनस, निपनिपम । ग , , मपमप गमगम स ॥
तारे - बिंदिगे य । । ----

(2) ॥ --वही--
गमपनस सरससस निपनिपम । ग,, मपमप गमगम स ॥
ता रे - - बिंदिगे या । ----
॥ गगम पनन,नप न न , संन, सं,,
बिंदिगे ओदे दारे ओंदे क सु
नसंनसंप, प, ननपम । प , , सनपमगस ॥
ता - रे बिंदिगे या । -

टिप्पणी

चरणं-I

॥	गमर	ससस	ननस,ग	गमपपप,		
	रा	मना	मवेंबो	रसवुल्ला	नी –	–रिगे
	मम न	ननसंनप,	। प , ,	, , ,	॥	
	ता रे	बिंदिगे	या			
॥	गमपन प,	नन नन	सं सं सं सं	ग नि	सस ।	
	का मिनि	याराकूडे	एकंत	वदेनु		
	नसनसप,	प,न नपम	। प , ,	सं न प म ग स ॥		
	ता – रे	बिंदि – गे	या	।		

शेष चरणं इसी धुन में गाये जायेंगे

पाठगत प्रश्न

1. अन्नमया कृति के कौन से समूह में ब्रह्मकदिगिन पदमु आता है?
2. राग मुखारी कौन से मेल की जन्य राग है?
3. राग तिलंग वर्ज राग की कौन सी श्रेणी में आती है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. प्रत्यक्ष संगीत सभाओं में जायें और विभिन्न कलाकारों की सी डीध कैसेट सुनें तथा अधिक से अधिक अन्नमाचार्य के संकीर्तन और पदगलु एकत्र करें।
2. दोनों रचयिताओं की रचनाओं का विशलेषण करें और सांगीतिक और साहित्यिक जीवन पर टिप्पणी तैयार करें।